डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 12-08-2020
विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद में दर्शन

यद्यपि ऋग्वेद में, सीधे-सरल रूप में किसी दर्शन का प्रतिपादन नहीं हुआ है तथापि भारतीय दर्शन के मूल सिद्धांत ऋग्वेद से ही लिए गए हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। वस्तुतः, ऋग्वेद में दर्शन संबंधी जो विचार बहुत ही सूक्ष्म रूप में इधर-उधर बिखरे हुए मिलते हैं, उन्हीं को लेकर विद्वानों ने बाद के दर्शनों का विकास किया हैं। ऋग्वेद में ऐसे 10-12 सूक्त हैं, जिनके विचारों को बीज रूप में लेकर उपनिषदकारों ने, अपने दार्शनिक विचारों को विशाल वटवृक्ष के रूप में पल्लवित कर लिया है। ऐसे सूक्तों में 'पुरुष सूक्त' (10/90), 'हिरण्यगर्भ सूक्त' (10,121) तथा 'नासदीय सूक्त'(10 ,129) का प्रमुख स्थान है।

1. एक ही परम शक्ति

ऋग्वेद में अनेक देवताओं की स्तुति के साथ ही साथ, सभी देवताओं में शक्तिरूप में विद्यमान किसी एक ही देवता की ओर भी संकेत किया गया है । इस रूप में, ऋग्वेद 1। 164। 46 में कहा गया है कि-

"इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निराहुरथो दिव्य: स सुपर्णो गरुत्थान्। एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहु:।।

अर्थात् एक ही परम शक्ति को विप्र गान बहुत प्रकार से या बहुत से नामों से कहते हैं।

पुरुष सूक्त- ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में इसी परम शक्ति को 'पुरुष' कहा गया है वहाँ केवल देवताओं में ही नहीं, अपितु संपूर्ण सृष्टि में पुरुष को देखा गया है । यथा,

"सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात्। स भूमिं विश्व तो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्" ।। ऋग्वेद 10/90/1।।

सहस्त्र शीर्ष आदि से युक्त पुरुष से तात्पर्य यहां सृष्टि के प्राणिमात्र के शीर्षों आदि से ही है । इस रूप में, वह परमात्मा पुरुष सभी प्राणियों में विद्यमान है । साथ ही, पुरुष को यहाँ, भूमि को व्याप्त करके उससे भी दश अंगुल बड़ा बतलाया गया है । इसका तात्पर्य यही है कि पुरुष भीतर और बाहर सभी ओर से इस भूमि (ब्रह्मांड) को व्याप्त किए हुए हैं ।

इतना ही नहीं, इसी सूक्त की दूसरी ही ऋचा में 'इस सबको' अर्थात दृश्यमान् जगत को पुरुष ही कह दिया गया है, चाहे वह पहले हुआ हो या आगे चलकर होने वाला हो-

“पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्"।। (ऋग्वेद-10/90/2)

और, इसके बाद तो, उसे और भी बड़ा कहा गया है -

"अतो ज्यायांश्च पूरुष: । (ऋ०10/90/3)

इस संपूर्ण सृष्टि का विकास इसी पुरुष से बतलाया गया है -

"तस्माद्विराडजापत विराजो अधि पूरुष:। स जातो आत्यरिच्यत रि प्रश्चादभूमिमथो पुर:।। (ऋ०10/90/5)

अर्थात् उस पुरुष से विराट्, विराट् से अधिपुरुष, तत्पश्चात भूमि और पुर (शरीर) आदि की उत्पत्ति हुई है।

नासदीय सूक्त- नासदीय सूक्त में सृष्टि से पूर्व की दशा का संकेत मिलता है । इसकी प्रथम ऋचा में प्रश्न उठाया गया है-

"अम्भ: किमासीद्गहनं गंभीरम् ।।(ऋ० 10/129/1)

अर्थात् क्या उस समय (अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति से पहले) केवल गहन गंभीर जल था? इसका उत्तर भी आगे चलकर इसी सूक्त में ऋषि ने दे दिया है -

"तम आसीत्तमसा गूळमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।।

अर्थात् तम (अंधकार) से आवृत केवल जल ही जल रूप में, यह सारी सृष्टि, उस समय थी।

इसमें कहा गया है कि वस्तुत: यह सृष्टि कहाँ से हुई है और कैसे हुई है, इसको कोई नहीं जानता है। वह परमात्मा जानता है अथवा नहीं जानता है? यह भी नहीं कहा जा सकता।

हिरण्यगर्भ सूक्त - हिरण्यगर्भ सूक्त (10/ 129) में **"कस्मै देवाय हविषा विधैम"** की बार-बार आवृत्ति के द्वारा एक ओर तो यह प्रश्न उठाया गया है कि हम किस देवता की स्तुति करें और दूसरी ओर उसके समाधान के रूप में वही उस सृष्टि कर्ता की, उन विविध प्रकार की शक्तियों का कथन भी किया गया है। अंत में, 'हिरण्यगर्भ' से या "प्रजापति" से ही सृष्टि की उत्पत्ति यहाँ कही गई है ।

इस प्रकार ऊपर के तीनों सूक्तों से 1. प्रलय, 2. सृष्टि और 3. सृष्टिकर्ता 'परमेश्वर' के विषय में विस्तार से बतलाया गया है।

२. जीवात्मा और परमात्मा

ऋग्वेद में, दशम मंडल की एक ऋचा में जीवात्मा और परमात्मा का संकेत मिलता है । भारतीय दर्शन के अनुसार माया-विशिष्ट आत्मा को जीव और माया से पृथक आत्मा को परमात्मा कहा जाता है । भारतीय दर्शन के इस सिद्धांत का बीज, ऋग्वेद की इस ऋचा में मिलता है-

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषष्वज्ञाते ।

तपोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति।।" (ऋग्वेद 10/164/10)।।

अर्थात सृष्टि रूपी वृक्ष पर मित्र रूप में दो पक्षी रहते हैं, उनमें से एक सृष्टि-फल का भोग करने वाला (१.) जीवात्मा है और दूसरा सृष्टि वृक्ष पर रहते हुए भी उसके फल का भोग न करने वाला (२.) परमात्मा है ।

इस ऋचा में सृष्टिरूप में 'प्रकृति' का भी संकेत है, जिसे यहां पुरुष (परमात्मा), प्रकृति और जीव, इन तीनों के कथन के द्वारा, भारतीय दर्शन के "त्रैतवाद" के मूल विचार की ओर भी हमारी दृष्टि जाती है

३. ऋत

ऋग्वेद में प्राप्त 'ऋत' की कल्पना को भी, ऋग्वेद के दार्शनिक विचारों में सम्मिलित किया गया है। ऋत वह व्यवस्था है, वह नियम है, जो सृष्टि के सभी पदार्थों में व्याप्त है और जिसके द्वारा सूर्य, चंद्रमा, दिन-रात आदि अपना कार्य नियम से, एक व्यवस्था में बंधे हुए होकर सतत् करते रहते हैं । विश्व का संपूर्ण नियमन इसी ऋत के द्वारा होता है। सृष्टि के मूल में भी यही ऋत था--

"ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत। (ऋग्वेद 10।190।10) ।।

इस प्रकार हम ऋत को भी ऋग्वेद के दार्शनिक विचारों में परिगणित करते हैं।

इसके अतिरिक्त मृत्यु, जीवन और परलोक या पितृलोक के विषय में भी ऋग्वेद के 'यम' सूक्त में विचार किया गया है और वहीं पुनर्जन्म का भी संकेत मिलता है। वहाँ कहा गया है कि अपने पुण्यों का फल भोगने के पश्चात् फिर जीवात्मा को, सभी इंद्रियों सहित शरीर की प्राप्ति होती है और वह पृथ्वी पर जन्म लेता है ।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि भारतीय दर्शन के सभी प्रमुख सिद्धांत बीज रूप में उपलब्ध होते हैं, जिनका आगे चलकर उपनिषदों में विस्तार से प्रतिपादन हुआ है।